सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit: (IV): 4 क्रियात्मक शोध / अनुसंधान

a. क्रियात्मक अनुसन्धान का अर्थ एवं विकास
b. क्रियात्मक अनुसन्धान की उपयोगिता
c. क्रियात्मक अनुसन्धान के उद्देश्य
d. क्रियात्मक अनुसन्धान का महत्व
e. क्रियात्मक अनुसन्धान के गुण
f. क्रियात्मक अनुसन्धान की सीमाएँ
g. क्रियात्मक अनुसन्धान की वाँछनीय परिस्थितियाँ
h. क्रियात्मक अनुसन्धान के सोपान

By:—

Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

क्रियात्मक अनुसन्धान का अर्थ एवं विकास

मौलिक अनुसन्धान की इसी सीमा को देखकर शिक्षा में क्रियात्मक अनुसन्धान का आन्दोलन चला। क्रियात्मक अनुसन्धान है जो कार्य करते-करते किया जाता है। मौलिक अनुसंधान के निष्कर्ष शिक्षा शिक्षा-विभागों अथवा प्रशिक्षण महाविद्यालयों के पुस्तकालयों की अलमारियों में बन्द रहते हैं और वे प्राथमिक अथवा माध्यमिक कक्षाओं तक पहुँच ही नहीं पाते। इस प्रकार विद्यालयों को मौलिक अनुसन्धान से कोई लाभ नहीं प्राप्त होता। प्रशिक्षण महाविद्यालयों एवं माध्यमिक विद्यालयों के बीच की खाई चौड़ी होती है। इस खाई को क्रियात्मक अनुसन्धान पाट देता है।

क्रियात्मक अनुसन्धान दैनिक कार्य-विधि को प्रभावी बनाने में सहायता प्रदान करता है। क्रियात्मक अनुसन्धान कोई नितान्त नवीन कल्पना नहीं है। योग्य एवं सफल शिक्षक सदा ही इसका प्रयोग अपने शिक्षण में प्रभाविता लाने के लिए करते रहे हैं। हाँ अपने वर्तमान एवं व्यवस्थित रूप में यह एक आधुनिक आन्दोलन कहा जा सकता है। पर इसकी जड़ें अतीत काल में भी देखी जा सकती हैं। आधुनिक युग में इसका प्रारूप औद्योगिक संस्थाओं में हुआ। शिक्षा के क्षेत्र में प्रचलित अनेक नयी संकल्पनाओं का जन्म मूल रूप में औद्योगिक क्षेत्र में ही हुआ है। उदाहरणार्थ वर्कशॉप, अभिक्रमिक अधिगम आदि आन्दोलन पर औद्योगिक युग की छाप स्पष्ट है। अमेरिका के औद्योगिक क्षेत्र में क्रियात्मक अनुसन्धान की धारणा ने जन्म लिया है और शिक्षा के क्षेत्र में इसे व्यवहृत करने का श्रेय सुविख्यात अमेरिका शिक्षाशास्त्री स्टीफेन एम. कोरे को है जिन्होंने टीचर्स कॉलेज कोलम्बिया विश्वविद्यालय के होरेस मन लिंकन इन्स्टीट्यूट ऑफ स्कूल एक्सपेरिमेन्टेशन में रहकर क्रियात्मक अनुसन्धान को गति प्रदान की।

क्रियात्मक अनुसन्धान में विद्यालय की प्रतिदिन की समस्याओं का ही अध्ययन किया जाता है जिससे कि विद्यालय में सुधार हो सके। अनुसन्धानकर्त्ता कोई शोध-छात्र न होकर अध्यापक, प्रधानाचार्य, प्रबन्धक अथवा निरीक्षक होता है। अनुसन्धान एक ऐसी क्रिया है जो विधिवत् सम्पन्न होती है इसमें किसी समस्या का सूक्ष्म अध्ययन किया जाता है।

क्रियात्मक अनुसन्धान का विकास प्रजातन्त्रात्मक शासन-पद्धति की देन है। जनतान्त्रिक मूल्यों की स्थापना के लिए विद्यालयों की कार्य-पद्धति में सुधार अपेक्षित है और क्रियात्मक अनुसन्धान द्वारा सुधार की दिशा में महत्त्वपूर्ण पग उठाये जा सकते हैं। वैज्ञानिक चेतना का आजकल पर्याप्त विकास हो रहा है और हम अपनी जीवन-शैली में परिवर्तन लाना चाहते हैं। उधर अनेक अनुसन्धानों के बावजूद शिक्षाशास्त्री कुछ कर नहीं पा रहे हैं, अतः विद्यालयों के कार्यों में सुधार लाने के लिए क्रियात्मक अनुसंधान को बल मिला। क्रियात्मक अनुसंधान मौलिक अनुसंधान की अपेक्षा अधिक मनोवैज्ञानिक है।

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit: (IV): 4 क्रियात्मक शोध / अनुसंधान

a. क्रियात्मक अनुसन्धान का अर्थ एवं विकास
b. क्रियात्मक अनुसन्धान की उपयोगिता
c. क्रियात्मक अनुसन्धान के उद्देश्य
d. क्रियात्मक अनुसन्धान का महत्व
e. क्रियात्मक अनुसन्धान के गुण
f. क्रियात्मक अनुसन्धान की सीमाएँ
g. क्रियात्मक अनुसन्धान की वाँछनीय परिस्थितियाँ
h. क्रियात्मक अनुसन्धान के सोपान

By:—

Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

क्रियात्मक अनुसन्धान का महत्त्व

यह नहीं कहा जा सकता है कि क्रियात्मक अनुसन्धान का हमारे स्कूलों में कोई महत्त्व नहीं है। इसका विद्यालयों में महत्त्वपूर्ण कार्य है क्योंकि इसके द्वारा हम अपने विद्यालय की पद्धतियों में विभिन्न सुधार ला सकते हैं। क्रियात्मक अनुसन्धान के द्वारा हम अपने विद्यालयों को गतिशील व उन्नतिशील बना सकते हैं। प्रधानाध्यापक व अध्यापकगण भी शिक्षा के विभिन्न पहलुओं को वैज्ञानिक बनाने के लिये क्रियात्मक अनुसन्धान की सहायता लेते हैं। क्रियात्मक अनुसन्धान की सहायता से हम एक अध्यापक के नाते विद्यालय में उत्पन्न होने वाली विभिन्न समस्याओं; जैसे—अनुशासन, सहगामी क्रियाओं का होना, पाठ्य-क्रियाओं का रुचिशील होना, विभिन्न विषयों का रुचिपूर्वक पाठन करना, पुस्तकालय की सुविधाओं का प्रयोग करना इत्यादि को सुलझा सकते हैं। यह पाठ्य-क्रियाओं तथा पाठ्य-सहगामी क्रियाओं में भी एक परिवर्तन ला देती है। जैसे-जैसे समाज में परिवर्तन होता जाता है वैसे-वैसे ही क्रियात्मक अनुसन्धान भी शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन ला देती है। इसका महत्त्व निम्न प्रकार या कारणों से भी माना जाता है—

1. यह स्वयं ही सुधार करने के लिये कदम उठाती है। इसमें जिस व्यक्ति की समस्या है वह उसी के समाधान के लिये सोचता है जिसका कि उसके सुधार पर स्थायी व महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

2. इसका सुधार सावधानी से आयोजित अनुसन्धान के आधार पर किया जाता है। इसीलिये इसमें सफलता के अच्छे आसार दिखाई देते हैं।

3. इस प्रकार के अनुसन्धान में वे ही अनुसन्धानकर्त्ता होते हैं जो कि इसी व्यवसाय में हो, जिससे इसके परिणाम अधिक अच्छे होते हैं। यह वास्तविक तथा प्रयोगात्मक तथ्यों पर आधारित होते हैं।

4. इसमें अनुसन्धानकर्त्ता स्वयं व्यस्त रहता है इसलिये इसके नियमों की व्यावहारिकता मानवों में अत्यधिक परिवर्तन ला सकती है।

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit: (IV): 4 क्रियात्मक शोध / अनुसंधान

a. क्रियात्मक अनुसन्धान का अर्थ एवं विकास
b. क्रियात्मक अनुसन्धान की उपयोगिता
c. क्रियात्मक अनुसन्धान के उद्देश्य
d. क्रियात्मक अनुसन्धान का महत्व
e. क्रियात्मक अनुसन्धान के गुण
f. क्रियात्मक अनुसन्धान की सीमाएँ
g. क्रियात्मक अनुसन्धान की वाँछनीय परिस्थितियाँ
h. क्रियात्मक अनुसन्धान के सोपान

By:—

Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

क्रियात्मक अनुसन्धान के गुण

1. यह शिक्षा में दिन-प्रतिदिन की उत्पन्न समस्याओं को शीघ्र हल कर देती है।

Scanned with CamScanner

2. यह उन समस्याओं के सुधार का प्रयत्न करती है जो कि आसानी से समझी जा सकें।

3. यह अध्यापक के व्यवहार अध्यापक के स्वभाव तथा पाठन सम्बन्धी विषयों में भी परिवर्तन ला देती है।

4. इसकी खोजें व्यावहारिक रूप से काफी सफल होती है।

5. यह सहयोग प्रदान करती है इससे विभिन्न व्यक्ति सहयोग के द्वारा ही किसी समस्या का समाधान कर पाते हैं।

6. इसमें समय कम लगता है।

7. यह कम खर्चीली होती है।

8. इसका रूप प्रयोगात्मक होता है।

9. इनके ऊपर बहस होने से अध्यापक को शिक्षा की समस्याओं के विषय में अच्छी सूझ मिलती है।

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit: (IV): 4 क्रियात्मक शोध / अनुसंधान

a. क्रियात्मक अनुसन्धान का अर्थ एवं विकास
b. क्रियात्मक अनुसन्धान की उपयोगिता
c. क्रियात्मक अनुसन्धान के उद्देश्य
d. क्रियात्मक अनुसन्धान का महत्व
e. क्रियात्मक अनुसन्धान के गुण
f. क्रियात्मक अनुसन्धान की सीमाएँ
g. क्रियात्मक अनुसन्धान की वाँछनीय परिस्थितियाँ
h. क्रियात्मक अनुसन्धान के सोपान

By:—

Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

क्रियात्मक अनुसन्धान की वाँछनीय परिस्थितियाँ

1. स्वतन्त्र व निर्भय वातावरण का होना।
2. प्रेरणा का होना।
3. प्रयोग करने की सम्भावना का होना।
4. सामूहिक प्रक्रियाओं का मूल्यांकन करने के लिये।
5. सहयोग का होना।
6. इच्छा का होना।
7. प्रशिक्षण का होना।

इस प्रकार से इसमें कमियाँ होते हुए भी अन्त में हम कह सकते हैं कि आज भी हमें अपने देश के विद्यालयों में क्रियात्मक अनुसन्धान को प्रोत्साहन देना चाहिये। अध्यापकों को अपनी समस्याओं को सुलझाने के लिये सहायता करनी चाहिये क्योंकि क्रियात्मक अनुसन्धान कक्षा की समस्त समस्याओं को सुलझाता है। इसने शिक्षा के क्षेत्र में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। यह अध्यापकों की कार्य-कुशलता में भी वृद्धि करती है।

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit: (IV): 4 क्रियात्मक शोध / अनुसंधान

a. क्रियात्मक अनुसन्धान का अर्थ एवं विकास
b. क्रियात्मक अनुसन्धान की उपयोगिता
c. क्रियात्मक अनुसन्धान के उद्देश्य
d. क्रियात्मक अनुसन्धान का महत्व
e. क्रियात्मक अनुसन्धान के गुण
f. क्रियात्मक अनुसन्धान की सीमाएँ
g. क्रियात्मक अनुसन्धान की वाँछनीय परिस्थितियाँ
h. क्रियात्मक अनुसन्धान के सोपान

By:—

Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

क्रियात्मक अनुसन्धान की सीमाएँ

1. यह पूर्ण से काल्पनिक तथा इसका रूप स्थानीय होता है।

2. यह बहुधा सैद्धान्तिक प्रत्ययों के परीक्षण, उनके सत्यापन तथा विरोधाभास से सम्बन्धित रहती है।

3. यह गुणात्मक रूप से कम महत्त्व की होती है। अध्यापक लोग अनुसन्धानकर्त्ता तो होते नहीं हैं इसीलिये वे इसके प्रभावशाली निष्कर्ष पाने के लिये कई कठिनाइयों का अनुभव करते हैं। जब समस्या की व्याख्या करनी पड़ती है तब वे कठिनाई महसूस करते हैं। वे बिना किसी निर्देशन व किसी उपकल्पना के लिये प्रदत्तों को एकत्रित करते हैं। वे पदकों (Variables) को नियन्त्रण करने की योग्यता नहीं रखते हैं। वे प्रदत्तों का भली-भाँति विश्लेषण व विवेचन नहीं कर पाते। इन सबका परिणाम होता है कि उनके निष्कर्ष उचित नहीं होते।

4. क्रियात्मक अनुसन्धान कभी-कभी बिल्कुल अन्धा होता है क्योंकि इसमें अध्यापक बहुधा अन्य समस्याओं से घिरा रहता है तथा वह उसका वैज्ञानिक वस्तुनिष्ठ निरीक्षण करने में भी असमर्थ रहता है।

5. इसके परिणाम से सामान्यीकरण नहीं किये जा सकते हैं क्योंकि इसके करने के लिये कोई निश्चित न्यादर्श को नहीं चुना जाता बल्कि जैसा होता है वैसा ही ले लिया जाता है।

6. यह कार्य अत्यधिक व्यस्त अध्यापकों के द्वारा किया जाता है जिनके पास बहुत कम समय होता है।

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit: (IV): 4 क्रियात्मक शोध / अनुसंधान

a. क्रियात्मक अनुसन्धान का अर्थ एवं विकास
b. क्रियात्मक अनुसन्धान की उपयोगिता
c. क्रियात्मक अनुसन्धान के उद्देश्य
d. क्रियात्मक अनुसन्धान का महत्व
e. क्रियात्मक अनुसन्धान के गुण
f. क्रियात्मक अनुसन्धान की सीमाएँ
g. क्रियात्मक अनुसन्धान की वाँछनीय परिस्थितियाँ
h. क्रियात्मक अनुसन्धान के सोपान

By:—

Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

क्रियात्मक अनुसन्धान के सोपान

क्रियात्मक अनुसन्धान में निम्नलिखित छः सोपानों की प्रायः चर्चा की जाती है—

1. समस्या की सामान्य जानकारी प्राप्त करने के पश्चात् उसको पहचानना।

Scanned with CamScanner

2. समस्या की परिभाषा करना एवं उसे परिसीमित करना।
3. समस्या से सम्बद्ध कारणों का विश्लेषण करना।
4. समस्या के समाधान के लिए क्रियात्मक प्राक्कल्पना की रचना।
5. चयनित क्रियात्मक प्राक्कल्पना के परीक्षण के लिए उपयुक्त रूपरेखा बनाना।
6. क्रियात्मक प्राक्कल्पना के विषय में निर्णय लेना एवं निर्णय का आधार खोजना।

अब आगे एक उदाहरण द्वारा इन सोपानों को स्पष्ट करते हुए क्रियात्मक अनुसन्धान का एक प्रतिरूप प्रस्तुत किया जा रहा है।

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit: (IV): 4 क्रियात्मक शोध / अनुसंधान

a. क्रियात्मक अनुसन्धान का अर्थ एवं विकास
b. क्रियात्मक अनुसन्धान की उपयोगिता
c. क्रियात्मक अनुसन्धान के उद्देश्य
d. क्रियात्मक अनुसन्धान का महत्व
e. क्रियात्मक अनुसन्धान के गुण
f. क्रियात्मक अनुसन्धान की सीमाएँ
g. क्रियात्मक अनुसन्धान की वाँछनीय परिस्थितियाँ
h. क्रियात्मक अनुसन्धान के सोपान

By:—

Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

क्रियात्मक अनुसन्धानों के उद्देश्य

1. हमारे देश में शिक्षा कार्य में लगे हुए सभी व्यक्ति—अध्यापक, प्रबन्धक, प्रधानाध्यापक आये दिन ऐसी समस्याओं का सामना करते हैं जो कि शिक्षा की उन्नति के विकास को रोकती हैं। इसीलिए क्रियात्मक अनुसन्धान का सबसे प्रथम व मुख्य उद्देश्य शिक्षा में उत्पन्न होने वाली आये दिन की समस्याओं के समाधान के लिये कार्य करना है।

2. इसका उद्देश्य विद्यालय के कार्यों में आवश्यक परिवर्तन लाना होता है।

3. उन प्रक्रियाओं में सुधार लाना जो कि विद्यालय परिस्थिति में नित्य प्रयोग की जाती है।

4. इसका उद्देश्य, अनुसन्धानकर्त्ता को कक्षा की समस्याओं के प्रति प्रेरित व सोचने के लिये अग्रसर करना होता है।

5. यह अध्यापक के स्वभाव (Attitude) को वैज्ञानिक तथा प्रयोगात्मक बनाती है।

6. इसका उद्देश्य किसी त्रुटिपूर्ण तरीके को त्यागना होता है।

7. इसका उद्देश्य, पाठ्यक्रम विद्यालय प्रबन्ध, सीखने की विधियों में सुधार करना होता है।

8. क्रियात्मक अनुसन्धान की सहायता से हम नई विधियों को शिक्षा में प्रयोग कर सकते हैं। प्रोजेक्ट विधि, किण्डरगार्टन विधि, माण्टेसरी पद्धति शिक्षा में क्रियात्मक अनुसन्धान का ही परिणाम है।

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit: (IV): 4 क्रियात्मक शोध / अनुसंधान

a. क्रियात्मक अनुसन्धान का अर्थ एवं विकास
b. क्रियात्मक अनुसन्धान की उपयोगिता
c. क्रियात्मक अनुसन्धान के उद्देश्य
d. क्रियात्मक अनुसन्धान का महत्व
e. क्रियात्मक अनुसन्धान के गुण
f. क्रियात्मक अनुसन्धान की सीमाएँ
g. क्रियात्मक अनुसन्धान की वाँछनीय परिस्थितियाँ
h. क्रियात्मक अनुसन्धान के सोपान

By:—

Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

क्रियात्मक अनुसन्धान की उपयोगिता

आजकल हमारे विद्यालयों की कार्य-पद्धति यान्त्रिक एवं जर्जर हो गयी है। इसमें जीवन-संचार करने के लिए अध्यापकों एवं प्रधानाचार्यों को अपनी कार्य-पद्धति में सुधार करना होगा। स्वतन्त्रता के पश्चात् देश में अनेक प्रकार की सामाजिक एवं आर्थिक समस्याएँ उत्पन्न हो गयीं। कुछ समस्याओं का सीधा सम्बन्ध विद्यालयों से है और इसका समाधान प्राप्त करने की दृष्टि से क्रियात्मक अनुसन्धान एक ठोस कदम है। हमारे माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों एवं प्रधानाचार्यों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं

Scanned with CamScanner

वस्तुनिष्ठ अभिवृत्ति का विकास करने के लिए भी क्रियात्मक अनुसंधान महत्त्वपूर्ण साधन है। अनुसंधान के बिना कार्य-शैली में सुधार लाना कठिन कार्य है। अतः यह कहा जा सकता है कि हमारे विद्यालयों की कार्य-विधि में अभीप्सित सुधार लाने के लिए, प्रजातांत्रिक आदर्शों की रक्षा के लिए, वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण उत्पन्न नई समस्याओं का समाधान प्राप्त करने के लिए, विद्यालयों की प्रगतिशीलता के लिए, विद्यालयों की कार्य-शैली में सुधार के लिए, यान्त्रिकता एवं रूढ़िवादिता को समाप्त करने के लिए, अध्यापकों व प्रधानाचार्यों में वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण उत्पन्न करने के लिए एवं छात्रों की उपलब्धि का स्तर ऊँचा उठाने के लिए क्रियात्मक अनुसन्धान एक उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण क्रिया है।

Scanned with CamScanner